उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः 1440/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 24 दिनॉकः 23–01–2025

दिनांक	:	23 जनवरी, 2025
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की तेईसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉं

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की तेईसवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 23 जनवरी, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के राईस ब्रीडर एवं मौसम वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; मत्स्य विभाग; रेशम विभाग; वन विभाग; उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (24 जनवरी, 2025 से 30 जनवरी, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह (24 जनवरी से 30 जनवरी, 2025) के दौरान 23 जनवरी को प्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में बादलों के आवागमन के साथ कहीं-कहीं बूंदा-बांदी/हल्की वर्षा होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त सप्ताह के अन्य दिनों में प्रदेश का मौसम मुख्यतया शुष्क रहने की संभावना है।

प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है, यद्यपि इस सप्ताह के आरंभिक चरण में घने कोहरे के प्रभाव से तापमान में क्रमिक गिरावट आने तदोपरांत 25 से 27 जनवरी के दौरान 15 से 25 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से तेज हवाओं के प्रभाव से कोहरे में कमी आने के परिणामस्वरूप तापमान में क्रमिक बढ़ोत्तरी होने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के शेष भाग, दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 24 से 26 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से (2-3 डिग्री सेल्सियस) कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस-पास या सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के उत्तर-पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश

भाग तथा मध्य मैदानी के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 08 से 10 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 06 से 08 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (31 जनवरी से 06 फरवरी, 2025)

द्वितीय सप्ताह के दौरान प्रदेश के विंध्य एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के संलग्न हिस्सों में कहीं-कहीं हल्की वर्षा होने की संभावना है। भाभर तराई एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस-पास; विंध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से (2-3 डिग्री सेल्सियस) अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 -2 डिग्री सेल्सियस) अधिक रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के शेष भाग तथा मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस; बुंदेलखंड एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 24 से 26 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के संलग्न पश्चिमी-उत्तर भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1-2 डिग्री सेल्सियस) अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 06 से 08 डिग्री सेल्सियस उत्तर-पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 08 से 10 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

मौसम के परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- अगेती आलू की खुदाई के बाद ग्रीष्मकालीन मूंग एवं सूरजमुखी की बुवाई हेतु खेत को तैयारी करें।
- यदि तापमान अपेक्षाकृत अधिक होता है तो गेहूं की सिंचाई के बीच के अंतराल को कम करने की आवश्यकता है।
- सिंचाई करते समय जल निकासी का उचित प्रबंध रखें अन्यथा तेज हवाओं की स्थिति में फसल गिर भी सकती है।
- रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों या कृषि विभाग के अधिकारियों की सलाह पर आवश्यकता अनुसार करें।

गेहूँ की खेती

- कल्ले निकलते समय गेहूँ की दूसरी सिंचाई तथा गाठें बनते समय तीसरी सिंचाई करें।
- गेहूँ की खड़ी फसल में यदि जिंक की कमी के लक्षण दिखाई दे तो जिंक सल्फेट का प्रयोग खड़ी फसल में संस्तुत मात्रा के अनुसार करें।
- गेहूं में पत्ती धब्बा रोग के लक्षण दिखाई देने पर थायोफिनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्लू.पी. की 700 ग्राम अथवा मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. मात्रा प्रति हे. की दर से लगभग 750 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

- पीली गेरूई के नियंत्रण हेतु प्रोपीकोनाजोल 25 प्रतिशत ई.सी. 500 मिली. प्रति हे. की दर से लगभग 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

रबी मक्का की खेती

- मक्के में फॉल आर्मी वर्म के लिये अवस्था अनुकूल है अतः 10 से 20 प्रतिशत क्षति की अवस्था में रसायनिक नियंत्रण प्रभावी होता है। इसके बचाव हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी अथवा इमामेक्टिन बेनजोइट 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी अथवा थायोमेथाक्सॉम 2.6 प्रतिशत+लैम्बडासाइहैलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- राई सरसों में बालदार सूंड़ी के नियंत्रण हेतु मैलाथियान 50 प्रतिशत ई.सी. की 1.5 लीटर या क्यूनॉलफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. की 1.25 लीटर मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा, सफेद गेरूई व तुलसिता रोग के नियंत्रण हेतु मैकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा जिरम 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3.0 किग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर लगभग 600-750 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिये।
- राई/सरसों के प्रमुख कीट माहू तथा चित्रित बग के नियंत्रण हेतु डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. अथवा डाईक्लोरोवॉस 76 प्रतिशत ई.सी. 500 मि.ली. अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल., 250 मि.ली. मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- दलहनी फसलों में सेमीलूपर कीट के नियंत्रण हेतु फिप्रोनिल 5 एस.सी. 500 मि.ली. का 600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर छिड़काव करें।
- चना खेत में यदि कटुआ कीट दिखाई दे रहे हों तो स्थान-स्थान पर बर्ड पर्चर लगायें तथा थोड़ी-थोड़ी मात्रा में कई स्थानों पर घास-फूस रखें। प्रातःकाल फूस पर छिपे हुए कटुआ कीटों को इकट्ठा कर समाप्त करें।
- मटर में फूल आने एवं दाना बनते समय आवश्यकतानुसार सिंचाई अवश्य करें।
- मटर/मसूर में फली छेदक/फली बेधक कीट के प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु फूल एवं फलियां बनते समय 5 फरोमोन ट्रैप और 2 प्रकार प्रपंच प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में लगायें तथा नीम के बीज आर्क (5 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करें या इमामैक्टिन बेन्जोएट 5 प्रतिशत एस.जी. का 5 ग्रा. 16 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें अथवा इंडोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत का 200 मि.ली. को 600 ली. पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।
- मटर/मसूर में काला माहू का प्रकोप होने पर बचाव हेतु एसीटामिप्रिड 20 एस.पी. की 50 ग्रा. 600 लीटर पानी में मिलाकर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 0.2 मिली. प्रति ली. पानी के साथ मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

गन्ना की खेती

- बसन्तकालीन गन्ने की बुवाई हेतु नवीन उन्नत किस्मों यथा को.शा.-13235, को.लख.-14201, को.-15023, को.शा.-17231, को.शा.-18231, को.लख.-16202, को. शा.-14233 आदि की बुवाई करें।

- लालसड़न रोग से संक्रमित किस्म को.-0238 की बुवाई न करें तथा पेड़ी भी न लें।
- शरदकालीन बावग गन्ने की साथ ली जा रही अंतः फसल की कटाई/तुड़ाई/खुदाई के पश्चात् फसल अवशेष खेत में मिलाकर जुताई कर दें।
- सिंगल बड/एस.टी.पी. विधि से नर्सरी 25 जनवरी के बाद से तैयार करें।
- चीनी मिल में आपूर्ति किये जा रहे बावग गन्ने की कटाई के पश्चात पेड़ी प्रबंधन अवश्य करें।

सब्जियों की खेती

- आलू की फसल में झुलसा रोग प्रकोप होने की स्थिति में रोकथाम हेतु मैंकोजेब/प्रोपीनेब/रिडोमिल (0.1 प्रतिशत) फफूदनाशक 2.0 से 2.5 कि.ग्रा. 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिन खेतों में बीमारी का प्रकोप हो चुका है उनमें किसी भी फफूदनाशक साईमोक्सेनिल 8 प्रतिशत +मैंकोजेब अथवा मेटालेक्जिल + मैंकोजेब का 2.0 से 2.5 प्रति हे. (1000 लीटर पानी) की दर से 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- आलू में एफिड (माहू) कीट की रोकथाम हेतु लैम्डासाइहैलोथ्रिल 2.5 प्रतिशत ई.सी. 1 मि.ली. प्रति ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मटर की फसल में वातावरण में नमी एवं कोहरे के कारण डाउनी मिल्ड्यू एवं पाउडरी मिल्ड्यू का प्रकोप होने की संभावना रहती है तो प्रकोप की दशा में 25 से 30 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से गंधक के चूर्ण का छिड़काव करें।
- टमाटर में फलबेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु नीम आधारित कीटनाशक 3 मिली. प्रति ली. पानी में अथवा फ्लूबेंडीमाइड 20 मि.ली. प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- टमाटर तथा मिर्च की फसल को झुलसा रोग से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/ली. पानी) की दर से मैकोजेब का छिड़काव करें। फसलों को कीटों से बचाव हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना 3 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर कीटनाशकों का प्रयोग करें।

बागवानी

- आम में बौर निकलने के समय मिज कीट का प्रकोप दिखाई पड़ने पर फेनिट्रोथियान 1 मिली./ली. पानी या डाईमेथोएट 1.5 मि.ली./लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- आम के तना बेधक की रोकथाम के लिये लोहे के तार/हुक से प्रभावित छिद्रों से कीटों को यांत्रिक रूप से हटाना चाहिये तथा छिद्रों को साफ करने के बाद क्लोरपाईरोफॉस 2 मि.ली. प्रति लीटर के घोल से रूई के फाहे को भिगोकर छिद्रों में डालकर छिद्र को मिट्टी के लेप से बंद कर दें।
- बेल के पेड़ों के ऊपर फफूंदीनाशकों कार्बेन्डाजिम+मैंकोजेब 02 ग्राम या टेबुकोनाजोल 01 मिली या प्रोपीनेब 01 मि.ली. या क्रोसोसिम हाईफनमेथाइल+क्लोरोथालोनिल 01 मिली प्रति लीटर पानी या पोटेशियम सल्फेट 3 से 4 ग्रा. प्रति लीटर का छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार करें।
- केले में माहू की रोकथाम के लिये इमिडाक्लोप्रिड 2 मि.ली. को प्रति ली. पानी में घोलकर पहले तथा तीसरे सप्ताह में छिड़काव करें।
- गुजिया कीट (मिलीबग) के नियंत्रण के लिये लगाई गई पॉलीथीन पट्टी को कपड़े से साफ कर दें। यदि पॉलीथीन पट्टी सरक गई हो तो उसे ठीक कर दें।
- अमरूद की फसल में उकठा रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव तथा 1 कि.ग्रा. ट्राईकोडर्मा को 70 से 80 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी हुई खाद में मिलाकर 1 से 2 कि.ग्रा. प्रति थाला की दर से मिट्टी में मिलायें।

- आंवलें की फसल में दीमक कीट से प्रभावित बाग में नियंत्रण हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना 2 से 5 ग्रा. प्रति लीटर पानी में घोलकर तने के आस-पास की मिट्टी में मिला दें।
- पुराने लीची के बाग में सिंचाई व थालों की निराई गुड़ाई करें।

पशुपालन

- पशुओं को आंतरिक ठंड से बचाने हेतु अजवाइन का पानी पिलायें एवं छोटे पशुओं को सरसों का तेल भी पिलायें।
- खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण कराया जा रहा है, यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- बरसीम अधिक खिलाने से पशुओं को अफरा हो सकता है, अफरे से बचाव के लिये बरसीम के साथ सूखा चारा मिलाकर खिलायें।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें एवं नमक तथा गुड़ का घोल बनाकर खिलायें।
- उ.प्र. पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, मथुरा द्वारा पशुओं को डूनिन ए.एस. खनिज मिश्रण तैयार किया गया है जिसको विश्वविद्यालय के निदेशक, शोध से 15 दिन पूर्व मांग पत्र भेजकर रू. 70 प्रति किलो दर से प्राप्त किया जा सकता है।
- विकासखण्ड स्तर/तहसील/जनपद स्तर पर पंडित दीन दयाल उपाध्याय बहुउद्देश्यीय पशुचिकित्सा शिविरों को आयोजन किया जा रहा है, जिसमें विशेषज्ञों की टीम द्वारा उपचार किया जा रहा है। इसका कृषक भाई नजदीकी पशु चिकित्सालय पर सम्पर्क कर लाभ ले सकते है।
- पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवीनाशक पशुचिकित्सक की सलाह से आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें उनको 60:40 के अनुपात में सूखा एवं हरा चारा मिलाकर खिलायें।

मत्स्य पालन

- मत्स्य बीज उत्पादक कॉमन कार्प की ब्रीडिंग जनवरी के अंतिम सप्ताह या फरवरी माह से प्रारंभ कराने के लिये 15 से 20 दिन पूर्व नर एवं मादा कॉमन कार्प के प्रजनक मछली (ब्रूड) को दो अलग-अलग तालाबों में संचयन कर लें।
- प्रजनक मछली (ब्रूड) ऑरगुल्स के संक्रमण से बचाने हेतु आवश्यकता अनुसार 80 से 100 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से बुटॉक्स या क्लीनर या टिनिक्स का छिड़काव दिन में 10 बजे पूर्वाह्न से 2 बजे अपराह्न के बीच करें।
- वर्तमान मौसम में प्राकृतिक आहार की उपलब्धता तालाब में बनाने हेतु प्रति एकड़ प्रत्येक 10 से 15 दिनों के अंतराल पर 15 कि.ग्रा. चूना, 15 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट, 5 कि.ग्रा. मिनरल मिक्सचर एवं 50 कि.ग्रा. सरसों या राई की खली (पानी में फुलाकर) घोलकर तालाब में छिड़काव करना चाहिये।
- वर्तमान मौसम में कार्प मछली वाले तालाब में पानी का स्तर 5 से 6 फीट एवं पंगेशियस मछली वाले तालाब में पानी का स्तर न्यूनतम 8 से 10 फीट बनाये रखें। पंगेशियस के तालाबों में प्रतिदिन 10 से 20 प्रतिशत तक पानी का बदलाव ट्यूबवेल के पानी से करें।

- वर्तमान मौसम में मछलियों को पैरासाइटिक संक्रमण एवं फफूंद से होने वाले संक्रमण से बचाव हेतु 40 से 50 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से नमक का घोल बनाकर छिड़काव करें या वी.के.सी. दवा 01 लीटर प्रति एकड़ की दर से घोलकर छिड़काव करें।

रेशम पालन

- एरी सेक्टर में बसंत व्यवसायिक फसल का कीट पालन 5 से 20 फरवरी के मध्य से तथा मलबरी (शहतूती) बसंत व्यवसायिक फसल का कीट पालन 20 फरवरी से प्रारंभ होने जा रहा है। अतः कीट पालकों को सुझाव दिया जाता है कि वह उपकरणों एवं कीट पालन भवन का समय से भलीभांति विशुद्धीकरण कर लें।
- शहतूती नर्सरी लगाये जाने का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। अतः आवश्यकतानुसार समय से सिंचाई करते रहे।

वानिकी

- यूकेलिप्टस पौध को अंकुरण कक्ष से छाया कक्ष में स्थानान्तरित कर दें अन्यथा कोहरे से नुकसान होगा।
- पॉपलर की कटिंग क्यारियों में लगा दें। बकैन जैसे पतझड़ी पौधों का रोपण कर दें।

आपदा प्रबंधन

- गन्ना एवं भूसा ढ़ोने वाली गाड़ियों जैसे ट्राली, ट्रक व बैलगाड़ी पर क्षमताओं से अधिक गन्ना एवं भूसा न लादें।
- कोहरे के समय गाड़ियों में फॉग लाइट का इस्तेमाल करें व गाड़ियों में आगे एवं पीछे रेडियम पट्टी का प्रयोग करें।
- कोहरा एवं शीतलहरी के सापेक्ष मृत्यु होने की स्थिति में पीड़ित परिवारों को 4.00 लाख की अहैतुक सहायता प्रदान की जाती है।

अन्य बिन्दु

- बैठक में विचार-विमर्श उपरांत यह निर्देश दिये गये कि कृषक उपयोगी प्रभावी संस्तुतियां दिये जाने हेतु डा. प्रिया रंजन, सहायक प्राध्यापक, पशु एवं पशु चिकित्सा विज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; डा. अवनीन्द्र कुमार सिंह, बीज प्रौद्योगिकी विभाग, भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी; डा. चंद्रकांत तिवारी, सहायक प्राध्यापक, वन जीव विज्ञान एवं वृक्ष सुधार विभाग, बांदा कृषि एवं प्रौ. वि. वि., बांदा तथा केन्द्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी एवं भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी के वैज्ञानिक; को भी आगामी बैठक में वर्चुअल प्रतिभाग करने हेतु आमंत्रित किया जाये।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 06 फरवरी, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट **upcar.up.gov.in** पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट **www.kisanmitraup.ai** पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल **upcar12@gmail.com**

पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(संजय सिंह)
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।

30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

24-1-25

(विनोद कुमार तिवारी)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की तेईसवीं बैठक दिनांक 23 जनवरी, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद।
2. श्री पी.के. सिसोदिया, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
5. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
6. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
7. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
8. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
9. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
10. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
11. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ
12. श्री गिरीश त्रिपाठी, सहायक निदेशक मत्स्य, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
13. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
14. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
15. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
16. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
17. श्री दशरथ सिंह, अपर सांख्यिकी अधिकारी, वन विभाग, उत्तर प्रदेश।
18. श्री नीरेन्द्र कमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।
19. डा. नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान विभाग, लखनऊ।
20. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
21. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ (ऑनलाइन)।